पवित्रता की याद दिलाती है:- ''राखी''

ब्रह्माकुमार:- भगवान भाई शांतिवन, मा. आबु

रक्षाबंधन यह त्योहार एक शुभ धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है । अगर इसको आध्यात्मिक दृष्टिकोण से पालन करेंगे तो सभी मनुष्य जातियों को प्रेम और बंधुत्व की भावनामें बांधकर सुक्ष्म विकार और बाहार के धोखे से बचाव किया जाता है।

स्थुल रुपमें रक्षाबंधन यह ब्राह्मण से अपने यजमान को और बहन से अपने भाई को पवित्र धागा बॉधकर एक साधारण रुपसे मनाया जाता है। लेकिन इस त्योहार का आध्यात्मिक रहस्य अलग ही है। इसको सही रीति से जानने से मनुष्य के संबध में जो बाधाएँ है वह और समस्याएँ दुर हो सकता है। रक्षाबंधन यह त्योहार मुख्य रुपसे ब्राह्मण से मंत्र उच्चारण करके अपने यजमान को पवित्रता की यादगार राखी बंधन यजमान के जीवन की अलग अलग प्रकार की गरीबी और भाग्यहीनता समाप्त करमे का प्रयत्न है । देवी इंद्राणी द्वारा अपना पति इंद्रदेव को राखी बांधने की एक कहानी मशहुर है। जिस समय इंद्रदेव आसुरी शक्ति से हार स्वा कर दैवी स्वराज्य और धनसंपत्ती खो बैठा । उस समय उसकी पत्नी इंद्रायणीने भगवान को सामने रखकर पवित्रता की यादगार राखी इंद्रादेव को बॉधी। उसने फिर आसुरी शक्ति को समाप्त कर फिर से राज्यभाग और धनसंपत्ती प्राप्त किया । जिस समय बाहर के शत्रुने भारतपर आक्रमण भारत पर कीया और संपति लोटना शुरु किया उस समय हिंदु नागरियोंने शत्रु से बचकर रहने के लिए पवित्रता का प्रतिक राखि का त्याहार अपने भाई के साथ मनाया की, कि आपातकालीन समय में भाई-बहन की रक्षा करेगा । लेकिन राखी बांधने का रिवाज हिंदु में केवल नही बल्कि अकबर और हुमायुँ ऐसे मुगल सम्राट ने भी हिंदु नारी के साथ बहन का संबध कायम रखने का दृढ़ संकल्प किया । मुगल बादशहने रक्षाबंधन के बंधन में बंधे हुए नारियों का दुश्मन से बचाव कियां।

समय और परिस्थितियों के प्रमाण रक्षाबंधन यह त्योहार वर्तमान समय केवल साधारण रुपमें बहन भाई को राखी बॉधकर, तिलक लगाकर मुख मीठा करने का रिवाज बना है। यह रिवाज भी बहुत कम चलता है। लेकिन रक्षाबंधन का अध्यात्मिक रहस्य अलग ही है।रक्षाबंधन से सभी को यही संदेश है कि अपना जीवन श्रेष्ठ शक्तिशाली, शांतमय सुखमय और सुरक्षित बनाने के लिए मन्सा, वाचा, और कर्मणा से पवित्र बनो।

अगर देखा जाय तो ब्राह्मण के एक वचन से यजमान का जीवन सुखमय, शांतमय बनना असंभव है। अगर ऐसा हो सभी बन गये होते। कहानी के प्रमाण देवी इंद्राणी ने पति

इंद्रदेव को राखी बॉधी अर्थात यह त्योहार केवल बहन भाई यजमान का ही नही बाल्कि महान देवी देवता जो पवित्र गृहस्थ में रहकर सफलता पायी इसका प्रतिक है। भाई बहन रक्षा कैसी करेगा? एक छोटा भाई बडे बहन की रक्षा कैसी करेगा ?

अगर देखा जाय तो रक्षाबंधन का त्योहार सभी मनुष्य को मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहने का संदेश देता है। क्योंकि पवित्रता की धारणा करते है तो ही जीवन में, परिवार में, समाज में, विश्व में सच्ची सुख शांति मिलती है क्योंकि पवित्रता ही सुख शांति की जननी है। भाई को राखी बांधने से जीवन में शुद्ध, श्रेष्ठ विचार नियम पर चलना इसकी प्रेरणा मिलती है। भाई को भी सभी नारियों के प्रति बहन का नाता, स्नेह, प्रेम, निर्माण होगा वास्तव में रक्षाबंधन हम सबके रक्षा का प्रतिक है। हम सबका अंतिम समय तक का रक्षक सर्वशक्तिवान परपिता, निराकार ज्योतिबिंदु शिव परमात्मा है।जिसको याद करने से स्वयं के कर्म पवित्र, श्रेष्ठ सहज बनेगी। रक्षाबंधन के समय चंदन और सिंदुर का टीका लगाया जाता है। यह टिका आत्मिक स्वरुप और गुण शक्ति की याद करके देता है। हम सब अजर अमर अविनाशी आत्मा है । सभी आत्माये भाई-भाई है। पवित्रता शांति प्रेम आंनद यह हमारा धर्म है। सभी से आत्मिक दृष्टि से भाई-भाई के संबध से देखो यही प्रेरणा टीका देता है।

मुख मीठा करना माना अपनी भाषा मधुर, श्रेष्ठ, दिव्य बनाना रक्षाबंधन के दिन भाई-बहन को खर्ची देता है। इसका आध्यात्मिक अर्थ है अपने में जो, विकारी स्वभाव संस्कार है। ऐसे 5 विकारों का दान (खर्ची) परमात्मा को देना । इन 5 विकारों का दान जब देंगे तब ही दु:ख, अशांति अपवित्रता इस ग्रहण से छुट जायेंगे । इसलिए कहावत भी है ''दे दान तो छुटे ग्रहण।'' इन 5 विकारों के विष को खत्म करने की शक्ति केवल परमात्मा के पास ही है। इसलिए उसको नीलकंठ, विषहारी कहा जाता है।

अब वर्तमान समय ऐसे विकारी तमो प्रधान दुनिया में स्वयं परमात्माा सर्व आत्माओं की इन 5 विकार रुपी दुश्मन से रक्षा करने आये है। इसके लिए परमात्मा पवित्र बनने का आदेश और संदेश सबको दे रहे है। इसका यादगार ही यह राखी का त्योहार है। यह त्योहार केवल एक दिन का नही बल्कि जबतक जीना है तबतक यहं पवित्रता की धारणा पक्की रखनी है। हर वर्ष में एक बार एक बार स्थुल रुपमें यह केवल अपनी पवित्रता की धारणा और अधिक मजबुत बनाने की प्रेरणा देने के लिए मनाया जाता है।

पवित्रता माना केवल ब्रह्मचर्य का पालन करना इतना ही नही बल्कि ब्रह्मचर्य के साथ ही साथ अपनी चाल चलन, बोल कर्म, सबंध संपर्क, संकल्प में भी इश्वरीय नियम मर्यादा पर

चलना । अगर उसका उल्लघन होता है तो समओ यह भी अपवित्रता है। इससे फिर जीवन में दु:ख अशांति मिलेगी। परमात्माद्वारा हमारी रक्षा नही होगी।

अब स्वयं परमात्मा सभी को यह पवित्रता की सुचक राखी बॉध रहे है। क्योंकि सृष्टि परिवर्तन के समय सभी के सामने महाभयंकर समस्याएँ, प्राकृतिक आपदाये, विकारों का प्रकोप विज्ञान की विध्वंसक शक्ति आदि आदि द्वारा समस्याएँ आयेगा उस समय स्वयं की तथा दुसरों की रक्षा करने के लिए पवित्रता का बल होना आवश्यक है। इसलिए अब हमे परमात्मा यह पवित्रता का कंगन बांध रहे है। इसके साथ ही इस सृष्टि का भविष्य मेंआनेवाले देवी देवता का पद पाने के लिए पवित्र रहना जरुरी है। इस तरह पवित्रता की याद राखी बांधने से ही हमारी रक्षा होगी।

इसलिए इस वर्ष हम सब मिलकर सुक्ष्म पवित्रता की राखी परमात्मा, द्वारा पवित्रता की प्रतिज्ञा रुपी धागे बांधन है। अपने में सुक्ष्म और स्थुल जो भी विकार है वह खर्ची का रुप में परमात्मा को दान देना है। तो ही आसुरी वृत्ति से अपनी रक्षा होगी तथा खोया हुआ सतयुग का राज्यभाग्य फिर से मिलेगा स्वयं के जीवन में, विश्वमें समाज में शांति जायेगी तथा अपनी हर तरह से रक्षा होगी। यही पवित्रता की याद दिलाती है राखी।

ओम् शान्ति